सफलता 'मंथन' की, क्रमशः .....

सीहोर: जिले के ही मगरखेड़ी गांव के निवासी आदिल खान ने कहा कि उसने 2016 में मंथन आईटीआई से कोपा ट्रेड से डिप्लोमा प्राप्त किया तथा तब से वह एक एमपी ऑनलाइन की दुकान पर कार्य कर रहा है। उसने बताया कि वह 10वीं के बाद पढ़ाई छोड़ना चाहता था परन्तु मंथन संस्थान के प्रचार के कारण उसने वहां एडमीशन लेकर यह सफलता पाई है।

जिलों से

● रिपोर्टर

एमडी ड्रग और ब्राउन शुगर के तस्कर गिरफ्तार, ठेके पर मिला माल बेचने का काम

इंदौर: इंदौर पुलिस ने ड्रग तस्करी के खिलाफ बड़ी कार्रवाई करते हुए एमडी ड्रग और ब्राउन शुगर के साथ कई तस्करों को गिरफ्तार किया है। यह अभियान क्राइम ब्रांच और स्थानीय थानों की टीमों ने मिलकर अंजाम दिया। एडिशनल डीसीपी राजेश दंडोतिया ने जानकारी दी कि क्राइम ब्रांच ने राजकुमार सब्जी मंडी इलाके से 105 ग्राम एमडी ड्रग के साथ दो तस्करों को पकड़ा। गिरफ्तार आरोपियों में रोशन कुमावत निवासी रामकमल रेसीडेंसी और राजू जाट निवासी नवादापंथ धार रोड शामिल हैं। ये दोनों आरोपी इंदौर में एमडी ड्रग बेचने के लिए लाए थे। उनसे पूछताछ जारी है ताकि इस तस्करी नेटवर्क से जुड़े अन्य लोगों तक पहुंचा जा सके। लस ने लक्की नामक आरोपी को पकड़ा, जो गौतमपुरा शासकीय स्कूल के सामने खाली मैदान में ब्राउन शुगर बेचते हुए पाया गया। लक्की ने पूछताछ में खुलासा किया कि उसे इलाके का एक व्यक्ति 700 रुपए प्रतिदिन पर ब्राउन शुगर बेचने के लिए देता था। पुलिस अब उस व्यक्ति की तलाश में जुटी है।

पूरे नेटवर्क की जानकारी जुटा रही पुलिस

ड्रग तस्करी के इन मामलों ने शहर में नशे के बढ़ते खतरे को उजागर किया है। पुलिस ने कहा कि उनका अभियान तस्करी के पूरे नेटवर्क को खत्म करने तक जारी रहेगा। गिरफ्तार किए गए आरोपियों से जानकारी हासिल कर अन्य तस्करों और उनके सहयोगियों को पकड़ने की कोशिश की जा रही है। पुलिस का कहना है कि नशे के कारोबार को जड़ से खत्म करने के लिए कड़ी कार्रवाई की जाएगी। साथ ही, पुलिस ने नागरिकों से अपील की है कि वे ऐसे मामलों में सतर्क रहें और किसी भी संदिग्ध गतिविधि की जानकारी तुरंत पुलिस को दें। यह सामूहिक प्रयास न केवल तस्करों के हौसले पस्त करेगा, बल्कि इंदौर को नशा मुक्त और सुरक्षित शहर बनाने में भी मदद करेगा।

लखपति भिखारी

भिखारियों का आधार रिपोर्ट में बताईये भिखारियों की संख्या बहुत कम है पुनर्वास के नाम पर ले जाएं, 2-3 दिन बाद वह वापस आ जाएंगे

भोपाल में भिखारियों की न्यूनतम वार्षिक आय 5 लाख, रिश्वत भी देते हैं, भिक्षावृत्ति ही फैमिली प्रोफेशन

● मंथन संवाददा

भोपाल। यह आंकड़े किसी को भी सोचने पर मजबूर कर देंगे परंतु इन आंकड़ों के साथ संलग्न एक और सच सरकारी सिस्टम के प्रति कई लोगों की अंतिम उम्मीद भी तोड़ देगा। मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में भिखारियों की न्यूनतम औसत वार्षिक आय रूपए 500000 है। कई भिखारी ऐसे हैं जिनका पूरा परिवार भीख मांगता है। वह इसमें खुश है और यदि कोई सरकारी अधिकारी उनके कल्याण की सरकारी योजना लेकर आता है तो उसे रिश्वत देकर वापस भेज देते हैं।

भोपाल में भिखारियों की जीडीपी

उपरोक्त एवं इस समाचार में दी जाने वाली तमाम जानकारी सरकारी सूत्र से प्राप्त हुई है। सरकार ने कुछ कर्मचारियों को भिक्षावृत्ति रोकथाम, सामाजिक कल्याण एवं पुनर्वास के लिए भिखारियों का सर्वे करने और उन्हें पुनर्वास के लिए शिफ्ट करने भेजा था। सरकारी रिकॉर्ड के अनुसार भोपाल में टोटल 8000 से ज्यादा धार्मिक स्थल है परंतु 18 धार्मिक स्थल ऐसी हैं जहां पर सबसे ज्यादा भिखारी पाए जाते हैं, क्योंकि यहां पर प्रत्येक भिखारी को एक दिन में कम से कम रू. 2000 मिल जाते हैं। कुछ भिखारी प्राइम लोकेशन पर बैठते हैं और टैलेंटेड है। इसलिए उनकी कमाई खास दिनों में रू. 5000 से भी अधिक हो जाती है। इन 18 धार्मिक स्थलों में मिलने वाले भिखारी की वार्षिक न्यूनतम आय 7.50 लाख रुपए है। यह इनकम परिवार की एक व्यक्ति की है। यहां कई ऐसे परिवार हैं जिसमें सदस्यों की संख्या 7 से अधिक है। यदि एक व्यक्ति न्यूनतम रू. 500000 कमाता है तो यहां रहने वाले सात सदस्यों वाले भिखारी का एक परिवार साल का 35 लाख रुपए कमाता है।

पुनर्वास नहीं चाहिए, रिश्वत देकर लौटा दिया

बड़े मंदिरों की प्राइम लोकेशन पर बैठे भिखारियों ने सरकारी अधिकारियों को स्पष्ट रूप से बताया कि वह इस स्थान पर भीख मांगते हुए बड़े संतुष्ट हैं। उन्हें सरकार की ओर से कोई पुनर्वास नहीं चाहिए। उन्होंने बताया कि यहां किसी भी प्रकार की समस्या नहीं है। दोनों समय पौष्टिक भोजन मिल जाता है। कुछ भिखारी, इस प्रकार की पूछताछ को देखते हुए अपना स्थान छोड़कर अन्यत्र चले गए। भिखारियों ने सरकारी कर्मचारियों को ऑफर दिया कि वह अपनी रिपोर्ट में बताएंगे यहां पर भिखारियों की संख्या बहुत कम है और 4-5 लोगों को पुनर्वास के नाम पर अपने साथ ले जाएं। 2-3 दिन बाद वह वापस आ जाएंगे।

जब हमने पूछा कि क्या उसे सरकारी कर्मचारी है भिखारियों से रिश्वत ली। तो हमारे सूत्र में कोई उत्तर नहीं दिया।

भोपाल के एमपी नगर थाने से चंद कदम दूर बिक रहा था एमडी ड्रग्स, तालों में कोमल, दो तस्कर पकड़ाए

भोपाल। भोपाल क्राइम ब्रांच ने एमडी ड्रग्स की एक खेप को पकड़ा है। पुलिस ने ड्रग की तस्करी करने वाले 2 तस्करों को भी गिरफ्तार किया है। तस्करों के पास से पुलिस ने 2 लाख रुपए कीमत की 19.7 ग्राम एमडी ड्रग्स जब्त की है।

क्राइम ब्रांच को मिली सूचना: पुलिस के अनुसार क्राइम ब्रांच को कहीं से सूचना मिली थी कि एमपी नगर स्थित यस बैंक के सामने दो युवक खड़े हैं। वे लोग नशीला पदार्थ बेचने की फिराक में हैं। पुलिस को जैसे ही भनक लगी कि इन युवकों के पास बड़ी मात्रा में एमडी ड्रग्स हो सकता है। प्रशासन की टीम ने बिना देरी किए त्वरित एक्शन लिया।

पुलिस की टीम ने लिया एक्शन: मामले की गंभीरता को समझते हुए तुरंत पुलिस की एक टीम घटनास्थल पहुंची। फिर उन्होंने बताए गए चेहरों के दो युवकों को हिरासत में लेकर पूछताछ की। उन्होंने ने अपना नाम साजिद खान उर्फ किट्टू (24) निवासी जावरा फाटक जिला रतलाम और नवेद अली (29) निवासी बरकत्तुल्ला के पीछे सीआई कालोनी थाना जहांगीराबाद भोपाल बताया।

लाखों में निकली कीमत: पुलिस ने इन्हें तत्काल हिरासत में ले लिया। पुलिस को दोनों युवकों की तलाशी लेने पर उनके पास सफेद रंग की एयरटाइट फली मिली, जिसके अंदर मटमैला दानेदार पदार्थ रखा था। पुलिस ने जांच की तो यह यह पदार्थ एमडी ड्रग्स निकला, जिसे पुलिस ने जब्त कर लिया। जब्त हुए माद्क पदार्थ का वजन 19.7 ग्राम और कीमत 2 लाख रुपए बताई गई है।

पशु तस्कर

क्षेत्र में लंबे समय से पशु तस्करी का कारोबार संचालित है। समय-समय पर पुलिस उन पर कार्रवाई भी करती है

अनूपपुर में 21 मवेशियों को ले जाते दो आरोपी गिरफ्तार, पुलिस कर रही पूछताछ

● मंथन संवाददाता

अनूपपुर। अनूपपुर जिले में पशु तस्करी का अवैध कारोबार लगातार बढ़ता जा रहा है, जिस पर समय-समय पर पुलिस कार्रवाई करती रही है। लेकिन अभी तक पूरी तरह से इस अवैध कारोबार पर लगाम नहीं लगाई जा सकी है।

पशु तस्करों से छुड़ाकर कांजी हाउस में रखे गए मवेशी

अनूपपुर में रामनगर पुलिस ने 21 नग मवेशियों की तस्करी कर ले जाते हुए दो आरोपियों को गिरफ्तार करते हुए मामले की जांच कर रही है। क्षेत्र में लंबे समय से पशु तस्करी का कारोबार संचालित है। समय-समय पर पुलिस उन पर कार्रवाई भी करती है। लेकिन अब तक यह अवैध कारोबार पूरी तरह से बंद नहीं हो पाया है। कोतमा क्षेत्र में पशु तस्करी के सबसे ज्यादा मामले सामने आए हैं। इस बार भी कोतमा क्षेत्र के रामनगर पुलिस ने ही इस पर कार्रवाई की है।

पुलिस को मुखबिर से सूचना मिली कि दो व्यक्ति मवेशियों को क्रूरतापूर्वक आमाडांड तरफ से ऊरा की ओर ले जा रहे हैं, जिसकी सूचना की तस्दीक पर कार्रवाई की गई। जो मुक्तिधाम के पास पीपरडोल के जंगल आमाडांड में दो व्यक्ति 16 नग भैंस, दो नग पड़िया तथा तीन नग पड़ा को क्रूरता करते हुए लेकर जा रहे थे। जो मौके पर पहुंचकर घेराबंदी कर पकडा गया तथा दोनों लोगों से नाम पता पूछा गया।

इसमें प्रिंस गोंड पिता राम सिंह गोंड उम्र 19 वर्ष, सोनू सिंह गोंड पिता बेचन सिंह उम्र 19 वर्ष दोनों निवासी ग्राम ऊरा ने बताया कि मवेशियों के मालिक रामकुमार साहू निवासी गढी थाना कोतमा एवं लखन गुप्ता निवासी ग्राम ऊरा का बताया। ले जाने की एवज में 400 रुपये देना बताया गया, जिस पर आरोपी प्रिंस गोंड, सोनू सिंह गोंड, राम कुमार साहू एवं लखन गुप्ता के विरूद्ध पशु क्रूरता अधिनियम, मप्र कृषक पशु परिरक्षण अधिनियम एवं अन्य धाराओं के तहत 21 नग मवेशी कुल कीमती चार लाख 83,000 रुपये को आरोपीगण प्रिंस गोंड एवं सोनू सिंह से जब्त कर मवेशियों को सुरक्षित कांजी हाऊस मलगा के सचिवालय के सुपुर्द किया गया, जिनका पशु चिकित्सा अधिकारी से मेडिकल परीक्षण कराया गया। इस कार्रवाई में निरंजन खलखो, सनत द्विवेदी, मनोज उपाध्याय, विनोद मरावी और अंशू कुमार शामिल रहे।

पेज 1 का शेष

कोलकाता स्थित बांग्लादेश उप-उच्चायोग के बाहर हिंदू संगठन का विरोध-प्रदर्शन...

मंदिर अधिकारियों ने बताया कि नरेंद्रानंदी कर रहे कई सौ लोगों के एक समूह ने मंदिरों पर ईंट-पत्थर फेंके, जिससे शोनी मंदिर और अन्य दो मंदिरों के द्वार क्षतिग्रस्त हो गए। कोतवाली थाना प्रमुख अब्दुल करीम ने हमले की पुष्टि करते हुए कहा कि हमलावरों ने मंदिरों को नुकसान पहुंचाने का प्रयास किया। हालांकि, पुलिस ने कहा कि दोनों पक्षों के बीच टकराव में मंदिरों को बहुत अधिक नुकसान नहीं पहुंचा है। दोनों समूहों ने एक-दूसरे पर ईंट-पत्थर फेंके।

दोपहर से पहले ही सभी मंदिरों के कपाट हुए बंद

शांतिनेश्वरी मंदिर प्रबंधन समिति के सदस्य तपन दास ने bdnewswyDcom को बताया, 'जुमे की नमाज के बाद सैकड़ों लोगों का जुलूस आया। उन्होंने हिंदू विरोधी और इस्कॉन विरोधी नारे लगाने शुरू कर दिए। हमने हमलावरों को रोका नहीं। जब स्थिति बिगड़ गई, तो हमने सेना को बुलाया, जो तुरंत पहुंची और व्यवस्था बहाल करने में मदद की। दोपहर से पहले ही सभी मंदिरों के कपाट बंद कर दिए गए। बिना किसी उकसावे के पहुंचे बदमाशों ने हमला कर दिया।' बांग्लादेश के इंटरनेशनल सोसाइटी ऑफ कृष्णा कॉन्शियसनेस (ISKCON) के पूर्व सदस्य, आध्यात्मिक नेता चिन्मय कृष्ण दास को 25 नवंबर को देशद्रोह के मामले में गिरफ्तार किया गया था। उन्हें चटगांव की अदालत ने जमानत देने से इनकार कर दिया था। राजधानी ढाका और चटगांव सहित बांग्लादेश के विभिन्न स्थानों पर हिंदू समुदाय ने चिन्मय कृष्ण दास की गिरफ्तारी के विरोध में प्रदर्शन शुरू किया। 30 अक्टूबर को, हिंदू समुदाय को एक रैली के दौरान चटगांव के न्यू मार्केट इलाके में बांग्लादेश के राष्ट्रीय ध्वज का अपमान करने का आरोप लगाते हुए, चटगांव के कोतवाली पुलिस स्टेशन में चिन्मय कृष्ण दास सहित 19 लोगों के खिलाफ राजद्रोह का मामला दर्ज किया गया। भारत के विदेश मंत्रालय ने चिन्मस दास की गिरफ्तारी और जमानत से इनकार पर चिंता व्यक्त की और बांग्लादेश से हिंदुओं और अन्य अल्पसंख्यकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने को कहा।

रहा राजनयिक तनाव: बांग्लादेश में लगातार हो रहे हिंदू विरोधी घटनाओं के कारण दोनों दक्षिण एशियाई पड़ोसियों के बीच राजनयिक विवाद पैदा हो गया है। भारत ने 29 नवंबर को एक बयान में कहा कि बांग्लादेश में हाल के दिनों में हिंदू समुदाय के खिलाफ नफरती बयानबाजी, हिंसा की घटनाओं के साथ-साथ मंदिरों पर हमलों के मामले बढ़े हैं। भारत ने इस मुद्दे पर गंभीर चिंता व्यक्त की और कहा कि बांग्लादेश में अंतरिम सरकार को सभी अल्पसंख्यकों की सुरक्षा की अपनी जिम्मेदारी निभानी चाहिए।

विदेश मंत्री एस जयशंकर ने संसद को बताया कि भारत ने बांग्लादेश में अल्पसंख्यकों के खिलाफ हिंसा की घटनाओं को गंभीरता से लिया है। उन्होंने कहा कि अल्पसंख्यकों सहित सभी नागरिकों के जीवन और स्वतंत्रता की रक्षा करना ढाका की प्राथमिक जिम्मेदारी है। दूसरी ओर, बांग्लादेश ने 29 नवम्बर को कोलकाता में अपने उप उच्चायोग पर हिंसक विरोध प्रदर्शन पर गहरी चिंता व्यक्त की और नई दिल्ली से भारत में अपने सभी राजनयिक मिशनों की सुरक्षा सुनिश्चित करने का आग्रह किया।

बांग्लादेश में हिंदुओं पर बढ़ते हमले के बीच इस अमेरिकी सर्वे की क्यों हो रही है चर्चा?

यह सर्वे अक्टूबर के आखिर में किया गया था जिसके अनुसार, 64.1 प्रतिशत लोगों का मानना है कि कार्यवाहक सरकार पिछली शेख हसीना शासन की तुलना में अल्पसंख्यकों को अधिक सुरक्षा प्रदान कर रही है। द डेली स्टार, ढाका ट्रिब्यून, बांग्ला न्यूज 24 और द बिजनेस स्टैंडर्ड सहित ज्यादातर बांग्लादेशी मीडिया हाउस ने इसी लाइन पर फोकस किया।

बांग्लादेश का मीडिया 'अल्पसंख्यकों की सुरक्षा' पर VOA का सर्वे शेयर कर रहा है

बांग्लादेश में 29 नवम्बर की नमाज के बाद हिंदुओं और मंदिरों पर हमलों के बीच, ढाका के मीडिया आउटलेट्स ने देश में अल्पसंख्यकों पर 'वॉयस ऑफ अमेरिका' के एक सर्वे को शेयर करते हुए खुशी जाहिर की। यह सर्वे दावा करता है कि बांग्लादेश में अल्पसंख्यक समूह मुहम्मद यूनुस की 'अंतरिम सरकार के तहत अधिक सुरक्षित महसूस कर रहे हैं'। हालांकि जमीनी हकीकत कुछ और है जो इस सर्वे के सैंपल से बयां हो रही है। अल्पसंख्यक अधिकारों के लिए लड़ने वाले एक हिंदू पुजारी की गिरफ्तारी और इस्कॉन पर प्रतिबंध लगाने की कोशिश के बीच बांग्लादेशी मीडिया की ओर से वॉयस ऑफ अमेरिका के एक सर्वे को जोर-शोर से प्रचारित किया जा रहा है।

क्या दावा करता है सर्वे?: यह सर्वे अक्टूबर के आखिर में किया गया था जिसके अनुसार, 64.1 प्रतिशत लोगों का मानना है कि कार्यवाहक सरकार पिछली शेख हसीना शासन की तुलना में अल्पसंख्यकों को अधिक सुरक्षा प्रदान कर रही है। द डेली स्टार, ढाका ट्रिब्यून, बांग्ला न्यूज 24 और द बिजनेस स्टैंडर्ड सहित ज्यादातर बांग्लादेशी मीडिया हाउस ने इसी लाइन पर फोकस किया।

सर्वे में शामिल लोगों में से 15.3 प्रतिशत ने माना कि स्थिति पहले से खराब हो गई है, जबकि 17.9 प्रतिशत ने महसूस किया कि इसमें कोई बदलाव नहीं आया है। सर्वे में 1,000 लोग शामिल थे, जिनमें से 92.7 प्रतिशत ने खुद को मुस्लिम बताया। इसका मतलब है कि यह सर्वे बहुं संख्या में बांग्लादेशी मुस्लिम रेस्पोंडेंट की धारणा को दिखाता है।

सुरक्षा को लेकर अलग-अलग धारणाएं

सर्वे से पता चलता है कि मुसलमानों और गैर-मुसलमानों के बीच अल्पसंख्यक सुरक्षा की धारणा अलग-अलग है। केवल 13.9 प्रतिशत मुस्लिम रेस्पोंडेंट का मानना था कि यूनुस सरकार के तहत अल्पसंख्यकों की सुरक्षा स्थिति खराब हुई है। वहीं 33.9 प्रतिशत गैर-मुसलमानों का मानना था कि स्थिति पहले से खराब हुई है।

डर के साये में जी रहे बांग्लादेशी हिन्दू

ढाका स्थित प्रोग्राम कोऑर्डिनेटर हिरेन पंडित ने बांग्लादेश के बिजनेस स्टैंडर्ड को बताया, 'हमारे गांव के घर जला दिए गए थे और हम अभी भी असुरक्षा के साथ जी रहे हैं।' सिर्फ ग्रामीण इलाकों में ही नहीं, राजधानी ढाका में भी अल्पसंख्यकों के बीच असुरक्षा बढ़ गई है। एक एनजीओ वर्कर जयति सरकार ने मीडिया आउटलेट को बताया, 'पहले, मैं अपनी बेटी के साथ रात 11 बजे भी घर लौटने में हिचकती नहीं थी। लेकिन अब, रात 8 बजे भी मैं असुरक्षित महसूस करती हूं।'